दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

HL-A-DTVF-17

निर्धारित समयः तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंकः 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): SONAL

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): (01) 16/07/17

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 0 2 2 1 4 0

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

प्रयास सराहनीय है। उत्तर-लेखन का अभ्यास करते रहें।

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 101 1/2 टिप्पणी (Remarks):

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेलः helpline@groupdrishti.com, वेबसाइटः www.drishtiIAS.com
फेसबुकः facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटरः twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) पहाड़ी हिंदी

पहाड़ी हिंदी अपभ्रंश से विकसित हिन्दी की बोलियो मे से एक है। इसका आविर्भाव हिन्दी भाषा क्षेत्र के हिमाचल के क्षेत्र में हुआ।

पहाड़ी हिंदी के दो प्रमुख स्वरूप अथवा बोलियाँ आज प्रचलित है: — 1) कुमाऊँनी
2) गढ़वाली

2/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रहीम के काव्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

~~रहीम के काव्य में खड़ी हिन्दी~~

रहीम हिन्दी साहित्य के ऐसे कवियों में शामिल हैं जिन्होंने हिन्दी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिए।

जहाँ तक खड़ी बोली हिन्दी का प्रश्न है, जो खड़ी बोली सिद्धों - नाथों की परंपरा में से चलकर अमीर - खुसरो तथा कबीर तक आई, वही आगे चलकर रहीम के काव्य में और अधिक परिष्कृत हुई।

उदाहरण के लिए →

"कबीरा यह घर प्रेम का, खाला का घर नाहिं।"
(हिंदी का खड़ी बोली वाला स्वरूप)

"रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।"

रहीम के काव्य में खड़ी बोली हिन्दी अपने परिनिष्ठित रूप के निकट दिखाई देती है।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अवधी के अरघान जायसी

हिन्दी भाषा एवं इसकी बोलियों के विकास में ~~जिस~~ न जिन कवियों ने महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाई हैं, उनमें जायसी का नाम भी शामिल है।

मलिक मुहम्मद जायसी भक्ति-काल के कवि हैं। वे जिस समय अपनी रचनाएँ कर रहे थे उस समय अवधी साहित्यिक भाषा के रूप में परिष्कृत नहीं हुई थी। सूफी प्रेमाश्रयी काव्य धारा के कवियों की परंपरा को निभाते हुए जायसी ने लोक-आख्यानों को काव्यात्मक रूप दिया तथा इसके लिए उन्होंने प्रचलित लोकभाषा अवधी को चुना।

हालाँकि अवधी का प्रथम उल्लेख अमीर खुसरो 'खालिकबारी' में कर चुके थे, किन्तु वह जायसी ही थे जिन्होंने अवधी को साहित्यिक भाषा बनाया।

जायसी ने 'पदमावत' में अवधी का अत्यंत मधुर रूप प्रस्तुत किया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

साथ ही अवधी के मार्मिक प्रयोग से उन्होंने इस रचना के कुछ प्रसंगों को अत्यंत प्रभावी बना दिया -

"जेठ जरै जग बहै लुवारा
उठे बवंडर धिकै पहारा ।
चारहु पवन झकोरै आगि
लंका डारि पलेका लागि ।"

उपरोक्त प्रसंग नागमती- विरह खंड का है। यह मार्मिक चित्रण अवधी भाषा के सधे हुए प्रयोग से ही हो पाया। जायसी का यह योगदान अभूतपूर्व है तथा इसी परंपरा को आगे तुलसीदास ने अवधी में लोकप्रचलित 'रामचरितमानस' की रचना की।

Good 6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) अपभ्रंश के भेद

वर्तमान समय में भाषा वैज्ञानिकों का मानना है कि अपभ्रंश भाषा के भी कुछ भेद हैं। ये भेद अपभ्रंश की भाषिक प्रवृत्तियों पर आधारित हैं -

क) प्राकृताभास अपभ्रंश : वह अपभ्रंश जो प्राकृत का आभास देती है, जिसे हम ~~पहली ईस्वी से~~ 500 ई के आसपास के साहित्य में देख सकते हैं।
[उदाहरण : रासो काव्य]

ख) प्रारंभिक अपभ्रंश : इस अवस्था में अपभ्रंश ने इसकी विशेष प्रवृत्तियाँ दिखनी शुरू हो गई थीं।
उदाहरण : रासो काव्य

ग) परिनिष्ठित अपभ्रंश : इस स्थिति में अपभ्रंश अपने वास्तविक रूप में दिखती है।
उदाहरण - सिद्ध - जैन साहित्य

गहराई लाओ
3/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ङ) हिन्दी भाषा-क्षेत्र

हिन्दी भारत की ऐसी भाषा है जो करीब 49 प्रतिशत जनसंख्या द्वारा बोली जाती है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि हिंदी भाषा का विस्तार बहुत बड़े क्षेत्रीय भू-भाग में फैला हुआ है।

पूरब में बिहार से लेकर, पश्चिम में गुजरात, तथा महाराष्ट्र के कुछ भागों तक हिन्दी समझी व बोली जाती है। इस विस्तृत भू-भाग में हमें हिन्दी के कई रूप अर्थात कई बोलियाँ मिलती हैं। जैसे- बिहार में मैथिली, भोजपुरी, अंगिका, उत्तर-प्रदेश में अवधी, खड़ी बोली, छत्तीसगढ़ में बुंदेली, राजस्थान में राजस्थानी इत्यादि।

इन सभी बोलियों में क्षेत्रीय प्रभाव दिखाई पड़ता है। किन्तु भिन्नताएँ होने के बाद भी हिन्दी भाषा के परिवार के ये सदस्य एक ही तार से जुड़े हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी भाषायी क्षेत्रों की इन बोलियों को आपस में जोड़ने का कार्य कुछ महान कवियों ने किया है। जैसे - कबीरदास ने अपनी कविताओं में ब्रज, अवधी, छत्तीसगढ़ी, राजस्थानी, पंजाबी इत्यादि सभी जगह के शब्द प्रयुक्त किए हैं।

"बरस्या बादर प्रेम का भीझ गया सब अंग।"

बरस्या – पंजाबी; भीझ – हरियाणवी

वर्तमान समय में जब विभिन्न भाषाओं के समर्थक उनके विकास के लिए कदम उठा रहे हैं, हमें भी डॉ. राम विलास शर्मा की 'हिन्दी जाति' की अवधारणा पर अमल कर हिन्दी भाषा क्षेत्र को भाषायी सुदृढ़ता प्रदान करने की कोशिश करनी चाहिए।

और हैं
5½/10
विशेषता तो भी बताएं

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'ब्रज' और 'अवधी' बोलियों के पारस्परिक संबंध पर विचार कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी भाषा अपने अंदर कई बोलियों को समायें हुए हैं। 'ब्रज' भाषा एवं 'अवधी' ऐसी ही दो प्रमुख बोलियाँ हैं।

ब्रज और अवधी भाषा मे कुछ समानताएँ हैं तथा कुछ अंतर भी हैं। समानता की बात करें तो दोनों ही अपभ्रंश से विकसित हुई हैं। साथ ही दोनों वर्तमान समय के उत्तर-प्रदेश राज्य के विभिन्न क्षेत्रों की बोलियाँ हैं। भाषिक प्रवृत्तियों के आधार पर यदि हम ब्रज भाषा और अवधी भाषा का विश्लेषण करें तो हम पाते हैं कि दोनों ही माधुर्य गुण संपन्न भाषाएँ हैं। उदाहरण के लिए :→

सूरदास के शब्दों में ~

"ऊधौ मन नाहीं दस बीस,
एक हुतो सो गयो स्याम संग
को अवराधै ईस।"

जहाँ गोपियों के कृष्ण-प्रेम का अत्यंत मधुर चित्रण ब्रजभाषा में हुआ है वहीं तुलसीदास ने रामचरितमानस में अवधी का सुंदर एवं मर्यादापूर्ण चित्रण किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'ब्रज' एवं 'अवधी' दोनों ही बोलियाँ मूल रूप से भक्ति-काल में ही साहित्यिक भाषा के रूप में परिणत हुईं। जहाँ 'अवधी' को जायसी ने 'पद्मावत' के द्वारा स्थापित किया, वहीं 'ब्रज भाषा' को सूरदास ने अपनी कविताओं का माध्यम बनाया।

"फिरि फिरि रोव कोउ नहीं डोला
आधी रात विहंगम बोला
तू फिरि फिरि डारै सब पाँखि
कासू दुख न लावसि आँखि।"
(नागमती- विरह खंड)

"निरगुन कौन देस को बासी।"
(सूरदास)

'ब्रज' और 'अवधी' दोनों ही लोकप्रचलित बोलियाँ रही हैं। अतः कुछ कवियों ने तो इन दोनों का एक साथ प्रयोग अपने काव्य में किया है। जैसे कबीर -

"संतों धोखा कासू कहिए
गुण में निरगुण, निरगुण में गुण
बाट छाँडि क्यों बहिए।"
(अवधी का प्रयोग)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

~~यह~~ संदर्भ काव्य के
" सात समंद की मसि करौं लेखनि सब वनराई।
धरती सब कागद करौं हरिगुण लिखा न जाई॥"
(ब्रजभाषा का प्रयोग)

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि 'ब्रज' और 'अवधी' दोनों बोलियाँ अपने आप में सशक्त हैं एवं दोनों ने ही हिन्दी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

9/20

दोनों के व्याकरणिक समानताओं एवं असमानताओं को भी बताएं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) बिहारी हिंदी की बोलियों का परिचय दीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारी हिंदी, पूर्वी हिन्दी की बोलियों से बनती है। मुख्य रूप से निम्नलिखित बोलियाँ इसके अंतर्गत आती है -

मैथिली, ~~मगधी~~ मगही, वज्जिका, अंगिका, भोजपुरी इत्यादि।

क) जहाँ मैथिली भाषा मिथिला एवं तिरहुत के क्षेत्र से संबंध रखती है, वहीं वज्जिका भी मूल रूप से मैथिली से ही विकसित हुई है। 'मैथिली' की भाषिक प्रवृत्तियों की बात करें तो यह ~~xxxx~~ हिन्दी की ल-रूप प्रधान बोली है।

उदाहरण के लिए : मैथिली भाषा में भूतकाल की क्रियाओं में लकारान्त शब्दों का प्रयोग होता है।
जैसे -

देखा > देखल
गया > गेल

इसके साथ ही कुछ अन्य मैथिली शब्दों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में भी ~~अकार~~ लकारान्त ~~शब्दों~~ का प्रवृत्ति दिखती है। मैथिली कोकिला विद्यापति की यह पंक्ति द्रष्टव्य है :-

"देसिल बअणा सब जण मिट्ठा
ते तैं सण जपहौं अवहट्टा।"

ख) ~~मगधी~~ मगही की बात करें तो यह बिहार के दक्षिणी भू-भाग ~~की~~ में बोली जाती है। पाटलीपुत्र का क्षेत्र जो ऐतिहासिक मगध साम्राज्य की राजधानी थी, इस भाषा का संबंध उसी क्षेत्र से है। यह भाषा ~~कि~~ मैथिली तथा वज्जिका की तुलना में कम मात्रा में माधुर्य गुण धारण करती है। यह बोली ब-रूप व ह-रूप के प्रयोग के लिए जानी जाती है।
जैसे भविष्यकाल की क्रियाओं में प्रयोग —

[खाओगे > खरब
जाओगे > जरब]

ग) भोजपुरी वस्तुतः ~~कि~~ बिहारी बोलियों में सर्वाधिक लोकप्रिय बोली है।
यह बोली ~~कु~~ उकारान्त शब्दों की बहुलता

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को धारण करती है।

[जाओगे > जइबु
खाओगे > खइबु]

कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि बिहारी हिन्दी की विभिन्न बोलियों ने अपनी भिन्न प्रकृतियों के आधार पर हिन्दी भाषा को और अधिक सुदृढ़ किया है।

9/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) अपभ्रंश की व्याकरणिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15

अपभ्रंश का समय 500 ईसवीं से 1100 ई. तक माना जाता है। इसके प्रमुख साहित्यिक स्रोतों जिनसे इसे व्याकरण की प्रवृत्तियाँ ज्ञात होती हैं, वे हैं - 'जिनदत्त कहा', 'णायकुमार चरिउ' इत्यादि।

अपभ्रंश की व्याकरणिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

क) ध्वनि योजना :

1) स्वर : अपभ्रंश में निम्नलिखित स्वर प्रयुक्त होते थे।

[अ आ इ ई उ ऊ ऍ ए ओ ~~औ~~ ओ]

ध्यातव्य है कि 'ऐ' और 'औ' का लोप पालि भाषा में ही हो गया था।

अपभ्रंश में 'ऋ' का 'इ', 'उ' तथा 'अ' के रूप में रूपान्तरण हुआ

[ऋण : रिण
हृदय : हिय]

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अनुनासिकता का लोप अपभ्रंश की प्रमुख प्रवृत्ति रही।

[सिंह : सीह]

व्यंजन संयोग के बीच में स्वरों को प्रयुक्त करने की प्रवृत्ति - (स्वर-भक्ति)

[प्रदेश : परदेस]

2) व्यंजन : अपभ्रंश की व्यंजन माला निम्नलिखित है -

[क ख ग घ / च छ ज झ / ट ठ ड ढ ण / त थ द ध / प फ ब भ म / य र ल व / स ह]

ध्यातव्य है कि यहाँ ङ, ञ, न, श, ष जैसे व्यंजन नहीं थे।

संयुक्त व्यंजनों के लुप्त होने की तथा द्वित्वीकरण की प्रवृत्ति भी दिखाई देती है।

[कर्म : कम्म]

अल्पप्राण व्यंजनों का अ/य में परिवर्तन तथा महाप्राण व्यंजनों का ह में परिवर्तन भी एक मुख्य प्रवृत्ति थी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

[रुधिर : रुहिर
दधि : दही]

ख) व्याकरणिक प्रवृत्तियाँ :
व्याकरण के स्तर पर कई नई प्रवृत्तियाँ दिखती हैं। जैसे-

1) निर्विभक्तिक प्रयोग : संज्ञा शब्दों के साथ प्रयुक्त होने वाली विभक्तियों का लोप।

2) परसर्गों का विकास : मुख्य रूप से संबंध कारक के लिए 'का' परसर्ग इसी काल में विकसित हुआ।

3) बहुवचन शब्दों में द्विवचन को भी सम्मिलित कर लिया गया।

ग) शब्द कोश : मुख्य रूप से तद्भवी शब्दों, देशज शब्दों व कुछ मात्रा में तत्सम व विदेशज शब्दों का प्रयोग।

अपभ्रंश की व्याकरणिक संरचना समझने के लिए व्यावहारिक उदाहरण :
"रग्गु जिन्मु निग्गुद गिउ भडसिनि खग्ग न भग्गु।
तिक्खा तुरीया ण मणिया गोरी गले ण लग्गु।"

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) विद्यापति की सौंदर्य चेतना का वैशिष्ट्य

विद्यापति आदिकालीन हिन्दी साहित्य के रचनाकार हैं। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं 'कीर्तिलता', 'पदावली' इत्यादि।

विद्यापति की सौन्दर्य चेतना का प्रश्न वस्तुतः उनकी रचना विद्यापति पदावली से संदर्भ रखता है। पदावली मूलतः कृष्ण-राधा प्रेम पर आधारित पदों का संग्रह है। इस रचना में विद्यापति ने राधा एवं कृष्ण का अत्यंत सुंदर चित्रण किया है। जैसे -

1) कृष्ण का सौन्दर्य : विद्यापति ने कृष्ण की सौंदर्य रूपी विभूति को महत्व देते हुए दिखाया है कि राधा किस प्रकार उनसे अभिभूत है और संपूर्ण जीवन भी उन्हें कृष्ण के दर्शन के लिए पर्याप्त नहीं लगता।

"सखि हे पूछसि अनुभव मोय
x x x x
जनम अवधि हम रूप निहारल नयन न तिरपित भेल।"

2) राधा का सौन्दर्य : राधा के सौन्दर्य

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वर्णन में विद्यापति कहते हैं -

"जहँ जहँ झलकत अंग तहँ तहँ
बिजुरि तरंग।"

विद्यापति की राधा 'किशोरी' हैं। जयदेव की राधा 'युवती' रूप में थी, जिन्हें विद्यापति किशोरी बनाते हैं। इसी परंपरा में आगे चलकर सूर ने राधा को सात वर्षीय बालिका के रूप में चित्रित किया है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) अज्ञेय की कहानियों की शिल्पगत विशेषताएँ

अज्ञेय मनोविश्लेषणवादी कहानी परंपरा के एक प्रमुख रचनाकार रहे हैं।
उनपर वैचारिक स्तर पर फ्रॉयड के मनोविश्लेषणवाद तथा सार्त्र के अस्तित्ववाद का प्रभाव है। यह प्रभाव उनकी साहित्यिक रचनाओं में संवेदना तथा शिल्प दोनों ही स्तरों पर नज़र आता है।

उनकी कहानियों की शिल्पगत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :-

क) कथानक : उनकी कहानियों में कथानक की पारंपरिक मान्यता समाप्त हो गई है। वे एक संपूर्ण जीवन को नहीं, अपितु केवल एक क्षण की घटना को लेकर कहानी लिखते हैं।

ख) कहानियों का आदि, मध्य एवं अंत का पारंपरिक ढाँचा यहाँ टूट जाता है। 'मानसिक यथार्थ' को चित्रित करने के लिए ऐसा हो जाना स्वाभाविक है। उनकी कहानियाँ किसी विशेष बिन्दु पर समाप्त नहीं होतीं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ग) अज्ञेय की कहानियाँ भाषा के स्तर पर बिंबात्मक तथा प्रतीकात्मक दिखाई पड़ती हैं।

घ) शैली के स्तर पर उन्होंने प्रत्यावलोकन, पत्र-शैली, डायरी-शैली इत्यादि का प्रयोग किया है।

कुल मिलाकर यह कह सकते हैं कि अज्ञेय ने जो प्रयोग अपनी शिल्प-कला में किए हैं, वही आगे चल कर नई-कहानी परंपरा में मुख्य भूमिका निभाते हैं।

6/10

Good

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) इप्टा

इप्टा ने एक रंगमंच संस्थान के तौर पर भारतीय रंगमंच के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

0

आधे-अधूरा अपेक्षित

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) अकहानी की विशेषताएँ

'अकहानी' 1960 के दशक में 'नई कहानी' के विरोध में शुरु हुई थी। यह परंपरा फ्रांस के 'ऐंटी स्टोरी मूवमेंट' से प्रेरित थी।

अकहानी संवेदना के स्तर पर 'अतिनिरर्थकता-बोध' को केन्द्र में रखती है। इस परंपरा ने पूर्ववर्ती सभी परंपराओं को खारिज करते हुए एक नई परंपरा शुरु की। पारंपरिक प्रतिमानों का खंडन करती हुई यह परंपरा अति-आधुनिकता का समर्थन करती है।

शिल्प के स्तर पर भी यह परंपरा पूर्व निर्धारित आधारों का खंडन करती है। यह परंपरा 'अशिल्प' पर आधारित है।

4.5/10

और विस्तार करें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'सूफी दर्शन' पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सूफी परंपरा इस्लाम के धरातल पर कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तनों के आधार पर बनी है।
इस परंपरा के अनुयायी इस्लाम के मूल ढाँचे के भीतर कुछ वैचारिक परिवर्तन कर कर खुदा की को पाने की कोशिश करते हैं। इस परंपरा का मूल दर्शन इस प्रकार है।

1) इस्लाम में खुदा को जगत और बन्दे से भिन्न बताया गया है।
इस्लाम मानता है कि खुदा इतना पाक है कि बंदा उससे एक नहीं हो सकता।
इसके विपरीत सूफी समर्थक भारतीय औपनिषदिक मान्यता 'अहं ब्रह्मास्मि' की तर्ज पर 'अन-अल-हक' को प्राप्त करने की कोशिश करते हैं।

2) सूफियों के अनुसार खुदा ने बंदे को दो प्रकार से ज्ञान दिया है – 'इल्म-ए-सकीना' (कुरान के माध्यम से) तथा 'इल्म-ए-सिना' (बंदे के हृदय में स्थापित ज्ञान)। सूफी समर्थक इल्म-ए-सिना को अधिक प्रामाणिक मानते हैं। उनकी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मान्यता है 'मन' में प्रेम स्थापित करके वे खुदा को प्राप्त कर सकते हैं।

3) सूफी परंपरा में प्रेम का अत्यधिक महत्व है। इस्लाम में खुदा और बन्दे में राजा और प्रजा जैसा संबंध होता है। जबकि सूफी समर्थक अपने खुदा से प्रेम का संबंध रखते हैं। और लौकिक प्रेम (इश्क-मजाजी) के द्वारा अलौकिक प्रेम (इश्क-हकीकी) की ओर जाने का प्रयास करते हैं।

4) सूफी परंपरा शरीयत, तरीकत, मारिफत के द्वारा 'हकीकत' की स्थिति तक पहुँचने की कवायद करती है। इस स्थिति में बंदा 'तसव्वुफ' को पाकर 'फना' होता है।

5) सूफी परंपरा में गुरु को महत्व दिया गया है। किन्तु सिद्ध-नाथों की परंपरा के विपरीत सूफी दर्शन में गुरु का मनुष्य होना जरूरी नहीं। वह प्रकृति भी हो सकती है।

6) सूफी परंपरा 'नव्य-प्लेटोवाद' से प्रभावित है। अतः इसमें 'भावनात्मक रहस्यवाद'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

के अंश दिखाई देते हैं।

सूफी दर्शन इस्लाम की पारंपरिक अवधारणा के ~~बाहर~~ भीतर लौकिक प्रेम को स्थापित करने वाला दर्शन है।

["मानुस प्रेम भएउ बैकुण्ठी
नाहिं ते ~~काह~~ काह छार एक मूँठि।"]

(सूफी काव्यधारा से एक पंक्ति)

ठीक है

11½/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी कहानी के विकास में कृष्णा सोबती के महत्त्व को रेखांकित कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृष्णा सोबती 'नई कहानी' परंपरा की एक महत्वपूर्ण लेखिका हैं। हिंदी कहानी के विकास में उन्होंने निम्नलिखित योगदान दिए।

क) संवेदना के स्तर पर : कृष्णा सोबती चूँकि 'नई कहानी' से संबंध रखती हैं अतः 'नई कहानी' परंपरा की सारी विशेषताएँ उनकी कहानियों में नज़र आती हैं। शहरी जीवन का अवसाद, एकाकीपन, मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मताएँ उनकी कहानियों के केन्द्र में हैं।

संवेदना के स्तर पर कृष्णा सोबती का एक अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान स्त्री-विमर्श के दृष्टिकोण से है। उनकी कहानी 'मित्रो मरजानी' में उन्होंने एक स्त्री पर थोपी गई यौन वर्जनाओं को दिखाया है। तथा यह भी दिखाया है कि किस प्रकार उनकी नायिका अपनी यौन आवश्यकताओं को सहजता से स्वीकार करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ख) शिल्प के स्तर पर : कृष्णा सोबती का शिल्प के स्तर पर महत्वपूर्ण योगदान है 'पंजाबी मिश्रित हिन्दी' का प्रयोग। इस लिहाज से वे पहली लेखिका हैं जिन्होंने हिंदी गद्य साहित्य में ऐसा प्रयोग किया। शिल्प के स्तर पर उनका एक और योगदान है देशज शब्दों का बहुतायत में प्रयोग। उनकी कहानियों में 'भौंडा', जैसे शब्द जिन्हें कुछ लोग गालियों की संज्ञा देते हैं, भी प्रयुक्त हुए हैं। कहीं-कहीं यह भाषा अश्लील भी लगती है, किन्तु कहानियों की विषयवस्तु देखकर इसके प्रयोग को उचित साबित किया जा सकता है।

कृष्णा सोबती हिन्दी कहानी की एक महत्वपूर्ण लेखिका हैं एवं स्त्री रचनाकारों में उनका अग्रणी स्थान रहेगा। उनकी कुछ प्रसिद्ध कहानियाँ हैं — 'बादलों के घेरे', 'मित्रो मरजानी' इत्यादि।

9/11

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'युवा हिन्दी कहानी' पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

युवा हिन्दी कहानी समकालीन कहानी की एक परंपरा है। इसके सूत्रधार मूल रूप से वे युवा लेखक हैं जिन्होंने समकालीन हिन्दी साहित्य में अपना योगदान दिया है। मुख्य रूप से इन युवा लेखकों ने हिन्दी कहानी परंपरा को और अधिक सुदृढ़ बनाने की कोशिश की है।

पूर्ववर्ती परंपराओं से प्रेरणा लेकर ये युवा लेखक संचार क्रांति के साधनों जैसे ब्लागिंग इत्यादि के द्वारा अपनी रचनाओं के प्रति जागरूकता पैदा करते हैं। इस तरह वे हिन्दी साहित्य की लोकप्रियता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

2/20

विस्तार करें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) चन्द्रगुप्त नाटक की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चन्द्रगुप्त नाटक जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखा गया नाटक है।

इस नाटक के मुख्य पात्र ऐतिहासिक पात्र हैं – मगध का राजा चन्द्रगुप्त और उसके गुरु चाणक्य।

~~चन्द्रगुप्त~~ 'चन्द्रगुप्त' नाटक की कहानी मूल रूप से चन्द्रगुप्त के मगध पर अपने प्रभुत्व की स्थापना से लेकर अपने गुरु चाणक्य की उसके जीवन पर नियंत्रण रखने से उत्पन्न होने वाले द्वंद्व को चित्रित करती है। यह नाटक जयशंकर प्रसाद के अन्य नाटकों की तरह ही 'प्रसादान्त' नाटक है। ~~जो~~ जिसके अंगीरस का निर्धारण इसके अंत पर निर्भर होता है। यह नाटक रंगमंचीयता की दृष्टि से प्रसाद के अन्य नाटकों की तरह ही कठिन है।

~~'चन्द्रगुप्त' नाटक~~

5/15

गहराई लाएँ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) "भक्तिकाव्य सांस्कृतिक संवाद की कविता है जिसके प्रमाण संतकाव्य और सूफीकाव्य भी हैं।" दोनों काव्यधाराओं के प्रमुख कवियों का नामोल्लेख करते हुए उपर्युक्त मत का परीक्षण कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हमारी संस्कृति का निर्माण हमारी चित्तवृत्तियों से होता है। साहित्य हमारी चित्तवृत्तियों को प्रभावित करता है तथा इस रूप में सांस्कृतिक ~~का~~ विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भक्तिकाव्य के संदर्भ में भी यह बात लागू होती है। भक्तिकाव्य अपने मूल स्वरूप में एक ऐसी काव्यधारा है जिसने हमारी सामाजिक, धार्मिक, एवं वैचारिक धारणाओं को सुदृढ़, एवं प्रगतिशील बनाया है। ~~इस~~ को लिहाज से भक्तिकाव्य सांस्कृतिक संवाद की कविता कहा जा सकता है।

संतकाव्य की बात करें तो इसके मुख्य कवि कबीरदास सदैव ही अपनी वाणी में अभूतपूर्व सांस्कृतिक चेतना धारण करते हैं। उन्होंने भारत की सामासिक संस्कृति के निर्धारण के लिए धार्मिक व्यवस्थाओं ~~का~~ ~~के~~ में निहित विषमताओं को दूर करने का प्रयास किया जैसे -

"अरे इन दोउन राह न पाई
हिन्दुन की हिन्दुआई देखी, तुरकन की तुरकाई"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर ने समाज को जाति व्यवस्था से उबरने की राह भी दिखाई-

"जाति-पाति पूछे नहीं कोई
हरि का भजे सो हरि का होई।"

इसी प्रकार यदि हम सूफीकाव्य धारा की बात करें तो, जायसी सूफियों की सांस्कृतिक समन्वय की चेतना को अपनी संपूर्णता में धारण करते हैं। वे कहते हैं -

"मानुस प्रेम भएउ बैकुण्ठी
नाहिं ते काह छार एक मूँठी।"

तुलसीदास ने भी सांस्कृतिक समन्वय की चेतना को अपनी कविताओं में उद्धृत किया है-

"अगुनहिं सगुनहिं नहि कछु भेदा"।

"का भाषा का संस्कृत प्रेम चाहिए
साँचु।"

उपरोक्त पंक्तियों में वे भक्ति की दो अलग धाराओं को एक करने की कोशिश करते हैं तथा इस बात पर बल देते हैं कि प्रेम का महत्व सबसे अधिक है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भक्ति-काव्य

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के सभी प्रमुख कवियों ने सांस्कृतिक संवाद को सुदृढ़ करने का प्रयास किया है। तथा इसी का परिणाम है कि आज भारत की गंगा-जमुनी तहज़ीब विश्व-प्रसिद्ध है।

अच्छा है।

6½/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation